॥ अर्हं नमः ॥

आत्मकथा
ADVENTURE SERIES

भाई

युगप्रधानाचार्यसम प.पू.चन्द्रशेखर वि.म.सा.

दिव्य आशीर्वाद

सच्चारित्र चुडामणि कर्म साहित्य निष्णांत सिद्धांतमहोदधि
पू.आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. एवं उन के विनेय
युगप्रधानाचार्यसम शासन प्रभावक गुरुदेव प.पू.श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा.

* निश्रादाता *

सिद्धांतदिवाकर गच्छाधिपति आ.श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.
सरलस्वभावी प.पू.आ.श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म.सा.

लेखक

मुनिराज श्री गुणहंसविजयजी म.सा.

Copies - 2,000

अनुवादक

अध्यापिकावर्य सुश्राविका कल्पनाबहन/ श्रावकवर्य मनोजभाई

* प्रकाशक *

कमल प्रकाशन ट्रस्ट
102-ए, चन्दनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर,
पोस्ट ओफिस के सामने, भट्ठा, पालडी, अहमदाबाद - 7.

* प्राप्ति स्थल *

नरेश जैन
373, Mint Street, Rajendra Complex,
(Near Mahashakthi Hotel)
Chennai - 600 079. Ph: 9841067888

मनोज जैन
Shree Adinath Enterprises
7, Perumal Mudali Street,
Sowcrapet, Chennai - 600 079.
Ph: 9840398344

पीयुष जैन
Sri Divyam
122, Anna Pillai Street,
Sowcrapet, Chennai - 600 079.
Ph: 9884232891

Design and Printed by:

Divyam
imagination alive
Chennai. Ph : 044-49580318
9884232891/8148836497

प्रस्तावना

अर्हं नमः

गीरीशजी का भूतकाल भयंकर था,
भविष्य भयंकर हो सकता है,
लेकिन
हम वर्तमान को देखते है।
उनका वर्तमान हमें अच्छा लगा,
इसलिए उनकी अनुमोदना की।
यदि भूतकाल देखोगे, तो महावीर भी
पापी थे ही न?
यदि भविष्य देखोगे, तो आज का सच्चा
साधु भी भविष्य में शैतान हो सकता है न?
महावीर का और साधु का वर्तमान देखकर
जैसे उनको वंदन करते हो, वैसे ही गीरीशजी
के अच्छे वर्तमान को देखकर उनकी अनुमोदना
करना।

युगप्रधानाचार्यसम पूज्यपाद गुरुदेव
श्रीचन्द्रशेखर विजयजी म.साहेब के
शिष्य मुनिगुणहंस विजय

दिनांक: 15-6-18
S.P.R. ओसियन हाइट्स

"साहेबजी! आप साक्षात् परमात्मा के अंश हो, इसलिए आपके सामने मैं जो कुछ भी कहुँगा वो शत प्रतिशत सच ही कहुँगा...."

गुजराती वाडी के स्वाध्याय के लिये स्वर्ग समान उपाश्रय में हम बिराजमान थे। शाम का प्रतिक्रमण पूर्ण होने के बाद मैं कमलेश भाई के साथ बातें कर रहा था। दो दिन पहले एक विशिष्ट ढोलक बजाने वाले जैन भाई को मैंने उसकी जीवन कथा सुनने के लिए बुलाया था, परंतु कार्यक्रमों की व्यस्तता के कारणवश वो आ नही सके। शाम को वो भाई बाहर आकर खडे थे।

कमलेश भाई उसको अंदर लेकर आये। घडी 8.30 का समय दर्शा रही थी। चेन्नई की भीगी गर्मी में भी वातावरण अनुकूल था।

ये ढोलक बजाने वाले भाई के साथ मेरा ता. 9 अप्रैल को मुमुक्षु नेहा-निधि बहन की दीक्षा के निमित्त चेन्नई के कार्यक्रम के दौरान परिचय हुआ था। अल्पेशभाई तपोवनी (बापुजी) का मधुर कंठ और इस भाई का ताल, भाववृद्धि के लिये साधकतम था।

ता. 8 रविवार को वरघोडा था और ता. 9 को उपकरण के चढावे आराधना में रखने में आये थे। ता. ९ अप्रैल का दिन मैं जिंदगी में कभी भी नहीं भूल सकता, क्यों कि इस दिन मुझे जिनशासन के अद्भूत रत्नो की प्राप्ति और दर्शन हुए थे।

उसमें से एक रत्न यानि इस समाज की दृष्टि से नीचा-ढोलक बजाने वाला भाई!

रूम में आकर त्रिकाल वंदना कहकर वो नीचे बैठ गया। उसके जीवन के बारे में जानने की जिज्ञासा मैंने व्यक्त की और शुरुआत में ही उस भाई ने उपर के शब्द उच्चारे।

तब मेरे मन में बहुत से पिक्चरो में बताये हुए कोर्ट का दृश्य उपस्थित हुआ।

"मुझे तुम्हारी जीवनगाथा लिखने की भावना है, इसलिए आप मुझे जो Secret बाते हो वो स्पष्ट कह देना, जिससे मैं ध्यान में रखकर लिखुं," मैंने उनको Tension Free करने के लिए कहा। उसने सिर हिलाया और अपने दु:ख भरे इतिहास के एक-एक पन्नों को मेरे सामने खोलने की शुरुआत की।

"म. सा. ! मेरा जन्म एक Lower Middle Class में हुआ। एक बडी बहन है और मैं एकलौता पुत्र हुँ।

मेरे पिता ने बचपन में बहुत कष्ट झेला और ये कष्ट की हारमाला दो वर्ष पहले

तक चालु ही थी। वो स्टील मार्केट में नौकरी करते थे।

मेरा बचपन भी गरीबी में गुजरा। सुखी कुटुंब में बडे हुए बच्चो के जैसी सुख-सुविधाएँ हमारे पास नहीं थी।

मैं पढने में हुशियार था और दूसरी भी सब Sports Activity में मेरा नंबर आने से मैं हेडमास्टर का एकदम प्रिय बन गया था।

पर ..... भगवान को ये सब मंजुर नहीं था.......

मैंने 9वीं की परीक्षा दी, सुंदर Rank आया। मेरी बहन उस समय १२वीं में आनेवाली थी। हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति उस समय बहुत विकट थी।

म. सा.! क्या बात कहुं? ऐसे दिन आ गये कि **एक दिन दोपहर को मैं और मेरी बहन खाना खाते और दूसरे दिन दोपहर को मम्मी और पापा।** यानि कि एक दिन छोडकर एक दिन हमको खाना मिलता।

अब ऐसी परिस्थिति में लिखने पढने की बात कहाँ से हो? Fees कैसे भरे?

मुझे अपने मम्मी-पापा की बातो से पता चला कि हमारे पास उतने ही पैसे है कि जिससे या तो मैं पढ सकुं या मेरी बहन।

मैंने मेरे मन में निश्चय कर लिया।

दूसरे दिन से ही मैंने स्कूल में रावडीगिरी चालु कर दी।

रावडी गिरी यानि लडको को बिना कारण मारना, स्कुल के काँच फोडना, बेंच-सामान आदि नीचे पटकना, गंदी से गंदी गालीयाँ देना विगेरे। अरे, म.सा. ! एकबार तो गुस्से में मैंने मेरे हाथ से ही स्कुल का काँच फोड दिया था।

मेरी पूरी एक Gang बन गई थी। धीरे धीरे इसमें मेरे जैसे लडके बढते गये। 10-15 -20 और आखिर बढते-बढते 200 एकदम रावडी लडको की हमारी Gang बन गई। एक दिन ऐसा भी आ गया कि यदि लडको को ये पता चल जाये कि गिरिश इस रास्ते से आ रहा है, तो वे अपना रास्ता छोड देते थे।

धीरे धीरे सुपारी खाने की आदत पडी। हम सब लडके 80-100 रूपए की छुटकी नाम की सुपारी एक डब्बे में इकट्ठा करते और फिर थोडी-थोडी सब खाते।

जैसे-जैसे स्कुल में दिन बीतते गये, मेरा रावडीपना वैसे-वैसे बढता गया।

स्कुल में एकबार 3 दिन का मेला लगा। चीफ गेस्ट आ गये थे।

उस दौरान 3 दिन पहले मेरा हमारी मोतीलाल स्कुल के सामने रही हुई सुराणा

नामक स्कुल के एक लडके के साथ पंगा हुआ था। मेले के पहले दिन ही वो लडका ःमारी स्कुल के बाहर खडा था। मैंने उसे 2-4 गंदी गाली दी और मारामारी करने की ामकी दी।

वो भी गुस्से में आकर अपनी Gang को लेने चला गया। वो 20 मिनट के बाद :0 लडको को लेकर आया। कितने भी लडके हो, परंतु मुझे कभी भी किसी से भी डर ाहीं लगा। मैंने मेरे हाथ में एक बडा पत्थर उठाया और उस लडके के उपर धडाम दे ारा।

तभी योगानुयोग हमारे चीफ गेस्ट ने उपर से ये सब देख लिया। दूसरे सभी नडके भाग गये। स्कुल का पीउन नीचे आया और उसने मुझे कहा "तुझे उपर साहब ुला रहे है।"

मैं कपडे ठीक करके उपर गया। चीफ गेस्ट और हेड मास्टर वहाँ पर ही थे। उस ामय तो चीफ गेस्ट ने मुझसे कुछ भी कहा नहीं, परंतु सुबह आकर एच.एम. को मिलने ि लिए कहा। इन सब प्रसंगो के दौरान सच कहुं म. सा. ! तो मुझे बिलकुल भी भय का ानुभव हुआ नहीं।

मैं सुबह स्कुल की ड्रेस पहनकर स्कुल गया। चीफ गेस्ट वही पर थे। मुझे हाथ ां बिना एक भी शब्द कहे उन्होंने T.C पकडा दी। T.C जिसको मिलती है उसे दूसरे कोई ाी स्कुल में एडमिशन नहीं मिलता है। मैंने हँसते-हँसते T.C का स्वीकार किया। मेरे ्च.एम. ने मुझे आश्चर्य से पूछा, "अरे! तुझे यहाँ T.C मिल रही है और तुं हँस रहा है, तुं ागल हो गया है क्या?"

मैंने उनको कहा, "मेरे हँसने का कारण आप जानते नहीं हो और मैं जानता हुँ। ;सलिए मैं आपको पागल लग रहा हुं ये एकदम सहज ही है।"

मैं वहाँ से घर गया। मैंने T.C अपने मम्मी-पापा के हाथ में दे दी। वे तो हतप्रहत ह गये। वहाँ भी मैं हँसता ही रहा, "ये तूंने क्या किया? तेरे भविष्य का क्या होगा? तुझे ूसरी स्कुल में कौन लेगा? और उसमें भी शर्म के बिना तु हँस रहा हैं?" एक साथ बहुत े प्रश्नो की बौछार मुझ पर हुई।

मैंने एच.एम. को दिया हुआ उत्तर ही मम्मी-पापा को दिया और उनको भी मैं ागल जैसा लगा।

तीन दिन के बाद मुझे पता चला कि *'मुझे T.C मिलने के कारण मेरी बहन की फीस भर दी गई है'* और तब मैंने चेन की सांस ली।

''आपने अपनी बहन को आगे पढाने के लिए ये रावडी गिरी चालु की?'' मैंने गिरीशभाई को आश्चर्य से पूछा।

''हाँ ! म.सा. ! ऐसा कहते है ना कि **जब दु:खो के पर्वत टूटते है, तब एक साथ टूटते है।** ऐसा ही कुछ तब हमारे परिवार के साथ हुआ और इसलिए ही मुझे ये निर्णय लेना पडा।'' गिरिशभाई की आवाज में नमी थी।

''ऐसा क्या दु:ख आ पडा?'' इतिहास के पन्नो को खुलवाने के भाव से मैंने पूछा।

''म. सा! मैंने आपसे कहा ना कि मेरे पप्पा स्टील मार्केट में जॉब करते थे। वे पैसा घर लाते और हमारा पोषण करते।

हमारे घर के सामने एक चायवाला था। पिताजी और उसकी अच्छी मित्रता थी। एकबार उस चायवाले को पैसो की जरुरत पडी और उसने मेरे पापा से बात की।

पिताजी ने उसका दु:ख देखकर उसको पैसे दे दिये। फिर तो हर महिने थोडे-थोडे पैसे वो माँगता गया और पिताजी देते गए।

वापस दे देगा इस आशा से पिताजी ने उसको 1 लाख 80 हजार रूपए दे दिये थे। हमारी सारी कमाई साफ हो गयी।

दूसरे दिन हमने देखा कि उस चायवाले ने दुकान खोली ही नही। हमें खबर मिली कि वो अपने गाँव हमेशा के लिए चला गया है। भगवान ने हमको पहला झटका दिया।

उसी समय के दौरान पापा ने स्टील मार्केट की Job छोड दी थी।

घटना ऐसी बनी थी कि जिस दुकान में पापा काम करते थे वो दुकान धीरे-धीरे बडी होने लगी। इसलिए वहाँ नये-नये लोगो को नौकरी पर रखना जरुरी हो गया। उसमें एक व्यक्ति ने शेठ के कान मेरे पापा के सामने भंभेरे।

इस बात की खबर पापा को लग गई कि *'मौका मिलते ही शेठ मुझे निकाल देंगे।'* सर्वत्र अविश्वास का वातावरण छा गया। मेरे पापा के पास पैसे भले

कम थे, परंतु इज्जत तो बहुत थी। पापा को , कोई उनका अपमान करे, यह सहन नहीं होता था। और पापा ने विचार करके नौकरी छोड दी।

हमारे घर में कमाने का एक ही स्त्रोत था, वो भी बंध हो जाने के कारण दरिद्रता ने अपने पैर पसार लिये। खाने-पीने की कटोकटीका सर्जन हुआ। भगवान ने हमको दूसरा झटका दिया।''

"T.C लेने के बाद आपने रावडी गिरी छोड दी थी?'' मैंने बीच में प्रश्न पूछा।

"नही म.सा. !'' गिरिश भाई बीच में रूके, "**मैंने रावडी गिरी चालु ही रखी। एकबार खराब संगति लग जाए, फिर वो संगति को छोडना इतना सरल नही होता है।**

मैं उन मव्वालीयो के साथ हर रोज घूमता -फिरता। वे सब लोग साथ मिलकर दारू पीते, परंतु पता नही पहले से ही मुझे दारु से नफरत होने के कारण मैं उन सबके साथ बैठता जरुर था, परंतु पीता नहीं था। बहुत बार वे फोर्स करते, परंतु मैं अपनी कुलमर्यादा को जानता था।

मुझे सुपारी ज्यादा खाने के कारण छाती में दर्द होता था और पोषण अच्छा नही होने के कारण मैं दिनोदिन दुबला-पतला होता जा रहा था। मेरी ऐसी कमजोर स्थिति देखकर मामा ने मुझसे कहा," तेरी तबीयत ठीक रहती नहीं। तेरी छाती दु:खती है। इसलिए तुं बीयर पीना चालुं कर दे, तेरे लिए वो दवा का काम करेगा।''

म. सा.! मैंने 2 दिन बीयर पी, परंतु फिर अपने आप ही मैंने वो छोड दी।

हाँ ! म. सा. ! मैंने ठंडी स्वादवाली मिन्ट की सिगरेट 25 दिन पी थी। परंतु छाती में दर्द होने से मैंने वो भी छोड दी थी।'' मव्वालीयों की संगत में रहते हुए भी व्यसन से दूर रहे हुए गिरिशभाई के उपर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ।

"म. सा. !'' गिरिशभाई ने आगे बोलना शुरु किया, "मेरे एच. एम. ने मुझे T.C दी। मेरे मव्वाली दोस्तो को ये बात पता लग गई। उन्होंने जाकर चीफ गेस्ट को धपेट लिया। बेचारे का चेहरा लहु-लुहान कर दिया। फिर सब मेरे पास आये और बोले कि, "देखा तुझे बाहर निकालने वाले की हमने कैसी दशा की है। चल! अब तुं हमको पार्टी दे।''

मैं समझ गया कि उन लोगों को अपना कृत्य करने के बाद दारू की गरज थी।

मैंने मना किया, परंतु वो नही माने। इसलिए आखिर 100-200 रूपए दे दिये। उनको जो करना है करें। मैं वहाँ से चला गया। मैं उस वक्त परवश था। बिचारे जिस लडके के कारण मुझे T.C मिली थी, उसका तो बहुत ही खराब हाल इन मव्वालीयों ने कर दिया था।

एक बार मैं इन मव्वालीयों के साथ जा रहा था। इन मव्वाल्लीयों ने मुझे खास आज आने को कहा था। हम साहुकारपेट की नारायण मुदली नाम की गली में पहुँचे। मेरा एक मव्वाली मित्र एक व्यक्ति के पास गया और उस व्यक्ति को जिंदा ही काट डाला। मैंने पहली बार अपनी आँखो के सामने किसी की मौत देखी।

उस मव्वाली मित्र ने मुझे मदद करने के लिए कहा, परंतु मैं बहाना बनाकर वहाँ से निकल गया।

हम पूरी मिंट स्ट्रीट में इसी प्रकार घूमते रहते। किसी की भी बिल्डिंग के नीचे जाकर बैठ जाते..... गन्दी से गंदी बाते करते। वहाँ से गुजरने वाली लडकीयों को छेडते, उनका मजाक उडाते, पागलो की तरह उनके पीछे चिल्लाते। मैं भी इसमें ओतप्रोत था।

मैं सुबह–सुबह घर से निकल जाता और रात को 2-3 बजे घूम–फिर के वापस आता। मेरे मम्मी–पापा बहुत चिंतित रहते। हमारे समाज वाले मुझे रास्ते पर इस प्रकार से देखकर, घर जाकर मम्मी पापा को कहते। परंतु मैं सुधरा नहीं। मुझे पूरे जैन समाज वाले रखडेल के नाम से बुलाते, जिसका मतलब निकम्मा होता है।

घर की गरीबी मेरे रॉवडी गिरी में प्रेरक बनती..."

"म. सा.! धोलक बजाने की शुरुआत मैंने 7 वर्ष की उम्र से की थी," ढोलक बजाने की कला के विषय में पूछने पर गिरिशभाई ने कहा।

" साहेबजी ! इस गुजराती वाडी संघ के स्नात्रमंडल का मेरे उपर महान उपकार है। जब मैं छोटा था, तब इस स्नात्र मंडल ने ही मुझे मेरी कला को बाहर लाने का मौका दिया। स्नात्र मंडल वाले अपना ढोलक मुझे बजाने के लिए देते। घर जाकर मैं बर्तनों के उपर वैसे का वैसे ही ताल बजाता रहता।

बडे होने के बाद किसी भी प्रकार से ढोलक सिखने की मुझे धून लगी। पहले से ही घर की स्थिति खराब तो थी ही, तो भी मेहनत करके मैंने पैसे इकट्ठा किये और

ढोलक सिखाने वाले गुरुजी के पास मैं ढोलक सिखने गया। परंतु किसी भी कारण से गुरुजी और मेरा तालमेल बैठा नहीं। उनकी थोडी खराब आदतो के कारण उनके पास सिखना मुझे Risky लगा।

मैं भगवान के मंदिर में जाकर भगवान के सामने फुट-फुट कर रोने लगा। मैं प्रभु के सामने विलाप करने लगा, "आपने मुझे ये विद्या दी ही है, तो क्युं आप मुझे मार्ग बताते नहीं? कौन मुझे सिखायेगा? कौन मेरी परवरीश करेगा? आप ही मेरा आधार हो.... आपको ही रास्ता बताना है..... "आधे घंटे तक मैं सतत रोता रहा।

मुझे ढोलक अच्छी तरह से सिखने की तमन्ना के पीछे एक विशिष्ट घटना वजह थी। मुझे 2007 में पिंकेशभाई गुरुजी, संखेशभाई ने एक पूजा में ढोलक बजाने के लिए बुलाया था। मैंने अपने हुनर के अनुसार अच्छा बजाया।

आजु-बाजु बैठे हुए श्रावको ने मेरी प्रशंसा की और मुझे इज्जत दी। उसमे भी किसी-किसी श्रावक ने "वाह **गिरीशभाई**! वाह!" ऐसा प्रोत्साहन दिया। उसमे जो भाई शब्द था, वो मेरे मन को स्पर्श कर गया।

आज तक किसी ने भी मुझे इतने आदर से बुलाया नही था। रडियल, रखडेल, गिरीश, निकम्मा, चिला- चालु- ऐसे मन को ठेस पहुँचाने वाले शब्दो को सुनकार मैं कंटाल गया था। जिस प्रकार अफाट वन में कल्पवृक्ष मिलते ही पथिक को शांति मिलती है, उसी प्रकार मुझे भी भाई शब्द सुनने से एक परम शांतता की अनुभूति हुई।

मैंने सोच लिया कि रावडी गिरी छोडकर मुझे इसी फिल्ड में आना है। और सच कहुं म. सा.! जिस दिन से सरस्वती हाथ में आयी, मैंने उसी दिन से उन मव्वालीयों का संग छोड दिया और सरस्वती ने कभी भी अब तक निराश नहीं किया।

ये भाई शब्द मेरी जिन्दगी का Turning Point बना, मेरी कारकीर्दी का कारण बना। भगवान के सामने रोते हुए प्रार्थना करने के बाद, मेरे उपर आदिनाथ दादा की कृपा हुई और मैं देखकर-सुनकर सिखता गया।"

"**कामराज मेमोरियल ऑडिटोरियम!** चेन्नई का सबसे बडा हॉल ! हर एक कलाकार की ऐसी इच्छा होती है कि मैं इस स्टेज पर Perform करुं। मैं भी जबसे ढोलक बजाने की कला में घुसा था, तब से सहज ही यह इच्छा थी।

मेरा तो ये सपना था और सरस्वती देवी प्रसन्न हुई। मुझे जल्द ही ये Chance मिल गया। एक महिला मंडल का मेरे उपर फोन आया कि "आपको हमारे प्रोग्राम में ढोलक बजाना है , आपकी अनुकूलता है, कामराज में प्रोग्राम रखा है।"

मैं तो खुशी से उछल पडा। मैंने तुरंत ही हाँ कह दिया। उस प्रोग्राम की प्रेक्टिस के लिए जाना पडता और मैं जाता। सभी प्रकार से ताल-सूर बिठाकर मैंने उस प्रोग्राम की तैयारी कर ली थी। सभी प्रेक्टिसों में भी मेरा Performance अच्छा रहा।

आखिर जिस दिन का मुझे इंतजार था, वो धन्यतम दिन आ गया। मैं बहुत उत्साह में था। मैं मेरा ढोलक लेकर कामराज में पहुंच गया। सभी कलाकारों का अरेंजमेंट करने में मेरा स्थान Audience के एकदम सामने और स्टेज पर सबसे पहले रखने में आया।

मैं बहुत खुश हो गया। आज सचमुच ही प्रभु की अनहद कृपा मुझ पर बरस रही थी, ऐसी अनुभूति मुझे हुई।

प्रोग्राम शुरु होने में आधा घंटा ही बाकी था। दूसरे भी पूराने और ज्यादा अनुभवी कलाकारों की पधरामणी हुई। माईक सिस्टमवाला आ गया। सभी कलाकारों के पास माईक अरेंज किया गया, परंतु मेरी जगह पर माईक अरेंज किया गया नहीं।

माईक वाला भूल गया होगा यह सोचकर मैंने माईक वाले से माईक लगाने को कहा। माईक वाले ने मुझे मना कर दिया। मैंने उसे कारण पूछा। उसने कहा कि "मेरे पास जितने माईक मंगवाये थे, उन सभी को मुख्य कलाकर के निर्देश से मैंने अरेंज कर दिये है। मुझे उस कलाकार ने तुम्हारे वहाँ माईक लगाने के लिए मना किया था, इसलिए मैंने नहीं लगाया। तुम उनके साथ बात करो।"

मैं मुख्य कलाकार के पास गया।

"मेरे वहाँ भी माईक अरेंज कर दीजिए ना... मैं सबसे आगे बैठा हुं और पब्लिक को ढोलक सुनाने के लिए माईक आवश्यक है...." मैंने दीनतापूर्वक कहा।

"अरे, माईक की क्या जरुरत है?" मेरी बात को उडाते हुए उन्होंने कहा, "मैं तेरे पास में ही हुं। मेरे माईक में तेरे ढोलक की आवाज आ जाएगी।"

बिना कोई चर्चा किए मैं बेक स्टेज पर चला गया। मुझे पता लग गया कि *'मैं ज्यादा उपर न आउँ, मेरा उत्कर्ष न हो, लोग मेरी प्रशंसा न करें, इस कारण से मुख्य कलाकार ने ये चाल चली थी।'* वह बहुत अच्छे से जानता था कि मैंने कितनी

मेहनत की है, परंतु ईर्ष्या के कारण वो मुझे नीचे दबाना चाहता था। परंतु मैं असहाय था। आँसु बहाने के सिवाय दूसरा कुछ भी काम मैं नहीं कर सका। बेक स्टेज पर एक रूम में जाकर मैं बहुत रोया। वहाँ से चले जाने की इच्छा हुई, परंतु *'मैं तो पब्लिक के लिए नहीं, प्रभु के लिए बजाता हुँ'*, इस विचार ने मुझे रोक लिया।

मैं थोडा स्वस्थ होकर स्टेज पर आया। सभी कलाकार अपने–अपने वाजिंत्रों के आस पास बैठ चुके थे। दो मिनट में ही प्रोग्राम चालु होने वाला था। मैं भी अपने स्थान पर आकर बैठ गया। मन एकदम उदास था।

प्रोग्राम चालु हो गया। मेरे परवशता के आँसु भी चालु हो गये। बीच–बीच में वो कलाकार मुझसे पूछता कि, ''क्युं तेरी आँखो से पानी आ रहा है?''

''नही–नही ये तो कुछ नही, अभी गर्मी बहुत ज्यादा है ना... इसलिए पानी–पसीना गिर रहा है।''

मैं उनसे मुँह छुपा कर दूसरी ओर देखकर सतत रो ही रहा था। प्रोग्राम पूरा हो उसके पहले एक अटल निर्णय ने मेरे मन में आकार धारण कर लिया था।

'हे सरस्वती माँ! अगर आपको अपनी कला का अपमान ही करना था तो मुझे क्युं निमित्त बनाया? आपकी इच्छा नही है कि मैं आपकी कला को धारण करुं? आप मुझसे खुश नही हो?

कोई बात नही.... मैं आज प्रतिज्ञा करता हुँ कि यदि आप जल्द ही मुझ फिर से इसी हॉल में ही, इसी स्थान पर ही बजाने का मौका दोगे, तो ही मैं ढोलक की कला आगे बढाउंगा, नहीं तो इस कला को मैं तिलांजली दे दूंगा। इतना ही नहीं, मेरा आज अपमान करने वाले लोग सामने पब्लिक में बैठे होंगे और मैं यहाँ उपर....... तो ही मुझे संतोष होगा।'

उस दिन का प्रोग्राम पूरा हुआ। आगे के 15 दिन बहुत तनाव में निकले। *'कला को पकड के रखुं या छोड दूँ?'* इसी उलझन में मन भटकता रहा और आश्चर्य का सर्जन हुआ।

16वें दिन एक मंडल वाले का मुझे फोन आया । मंडल की प्रसिद्धि चेन्नई में बहुत थी। मुझे उस मंडलवालो ने कार्यक्रम के लिए पूछा।

''कहाँ है?'', जिज्ञासा से मैंने पूछा

''कामराज में'', सामने से जवाब आया। सरस्वती थोडी प्रसन्न हुई हो ऐसा

लगा।

मेरी पहली शर्त पूरी हुई।

"दूसरे बजानेवाले कौन है?" मैंने फिर से पूछा....

"सब कुछ आपको ही तय करना है," उन्होंने कहा। मेरी खुशी की कोई सीमा नही रही।

सरस्वती देवी ने मेरी दूसरी शर्त भी पूरी कर दी थी।

कुछ महिनों के बाद प्रोग्राम था। मैने हाँ कह दी। मैंने साथी कलाकरों को पूछा, कि जिनका उन लोगों ने एक या दूसरे प्रसंग पर अपमान किया था, पुण्यवश सभी ने हाँ कही।

प्रोग्राम के लिए हमारी सब तैयारीयाँ हो गई। प्रोग्राम का दिन भी आ गया।

प्रोग्राम चालु भी हो गया और निर्विघ्न पूर्ण भी हो गया।

सरस्वती माँ ने मेरी प्रार्थना सुन ली थी। वे मुख्य कलाकार पब्लिक में बैठकर हमारा संगीत सुन रहे थे। मैंने सरस्वती माँ को बहुत धन्यवाद दिया।

उस दिन से मुझे पता चला कि, *'प्रभु के घर में देर है, पर अंधेर नहीं है ...'*

प्रभु के प्रति मेरी श्रद्धा एकदम दृढ हो गयी। अब कला को फैलाने से कोई मुझे रोक नहीं सकता था, क्योंकि म. सा. ! अब प्रभु मेरे साथ थे।"

"हमारे उपर जब-जब आपत्तियाँ आयी, तब-तब एक भी वक्त समाज ने अपना कर्तव्य निभाया नहीं..." बहुत दर्द के साथ गिरीशभाई के मुख से वचन निकल रहे थे।

"मेरे पापा की आर्थिक तंगी में कभी भी समाज वालो ने आकर भला-बुरा पूछा नही, अरे, उस उस अवसर पर हमारे शोषण का ही काम किया है।

मेरा ऐसा मानना है कि आज के समाज के सिर्फ दो ही कार्य होते है। एक तो जब किसी व्यक्ति का जन्म, शादी आदि खुशी का मौका हो, तब पहुँच जाना और दूसरा जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाये, तब पहुँच जाना।

जन्म और मरण के बीच के काल में समाज वाले कहां चले जाते है? ये बात म. सा. ! मुझे समझ में नहीं आती। समाज की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए

कि किसी भी परिस्थिति में वो व्यक्ति के साथ खडी रह सके।

म. सा.! मेरा भी ये ढोलक बजाने का कार्य चालु होने के बाद समाजवालो ने बहुत Pin मारने की कोशिश की थी। समाजवाले आकर मेरे पापा को कहते कि, "आपका लडका इस प्रकार ढोलक और तबला ही बजाएगा, तो इसके साथ शादी कौन करेगा?"

एक बार तो पापा के उपर एक संबंधी ने इतना प्रेशर डाला कि पापा ने तुरंत फोन करके मुझे घर बुलाया। मैं घर पहुँचा। वो भाई वहां पर ही बैठे हुए थे।

"तुं क्या करता है गिरीश? तुझे शादी करनी है या नहीं? तुं किसी नौकरी पर लग, नहीं तो तुझे लडकी कौन देगा?" समाजवादी भाई ने फायरिंग शुरु की।

"झुठ बोलना, लोगो का शोषण करना, दो नंबर का एक नंबर करना, पूरे दिन टेंशन में रहना, ऐसी.... सब मुश्कीले जिसमें हो, उस नोकरी–धंधे को आप अच्छा कहते हो और मैं प्रमाणिकता से ढोलक बजाकर–मेहनत करके पैसा कमाउं तो उसे आप हल्का–खराब कहते हो? ये आपका कैसा न्याय है? मुझे शादी करने में कोई दिलचस्पी नही है। अगर हो जाये, तो अच्छा और न हो तो भी अच्छा! प्रभु का मार्ग क्यां खराब है।" धगधगती खुँवारी के साथ मैंने जवाब दिया।

मेरा जवाब सुनकर वो चूप हो गये।

मेरे पापा भी ऐसी सभी समाजिक बातो में स्पष्ट हैं।

मेरी बहन की शादी करवानी थी। पैसे तो कम ही थे। ससुराल वाले बहन को देखने आये। पापा ने उनको स्पष्ट कह दिया कि "देखिए! मेरे पास मेरी संस्कारी लडकी है। पैसे की बात करोगे, तो मै जितना भी हो सकेगा उतना करुंगा, बाकी तो मेरी शक्ति नही है।" और ससुराल वाले खानदान होने से बात मान गये। शादी हो गई और आज बहन बहुत ही सुखी कुटुंब में है।

म.सा. ! ये सब देखने के बाद मैंने निर्णय कर लिया।

1. समाज के साथ ज्यादा लेन–देन करनी नहीं।

2. समाज की झूठी बाते सुननी नहीं।

3. झूठे समाज के प्रोग्राम में जाना नहीं, जितना आवश्यक हो उतना ही करना।

समाज तो सब अच्छा बोले तो अच्छा और बुरा बोले तो बुरा कहने वाला है। उसके उपर विश्वास रखना मुश्कील है और इसलिए ही मेरे पापा ने हमेशा एक बात

हमको सिखायी है कि 'कितना भी खराब समय आ जाए, परंतु कभी भी किसी के भी सामने हाथ फैलाना नहीं। दो टाईम कम जलसे करना, परंतु व्याज की घाणी में पीसना नहीं....' और आज तक मैंने एक रुपया भी ब्याज से या किसी के पास से यूं ही उधार लिया नहीं और इसलिए हमारा परिवार सुखी है।''

"आप धार्मिक में क्या-क्या करते हो?" मैंने प्रश्न किया। आपको जानकर आश्चर्य और खुशी हो इतनी सब वस्तुएँ यह ढोलक बजाने वाला जैन श्रावक करता हैं।

गिरिशभाई ने कहा, "म. सा. ! मैं हर रोज मंदिर में जाकर पूजा करता हुं और 108 खमासमण देता हुँ। मुझे आदिनाथ भगवान अतिप्रिय है। मेरे जैसे भटके हुए व्यक्ति को मार्ग पर लानेवाले एकमात्र ये प्रभु हैं।

मैं हर पूनम को केसरवाडी तीर्थ जाता हुं और हर रोज पूजा किये बिना तो मैं नाश्ता भी नहीं करता। कंदमूल का तो आजीवन त्याग है। सरस्वती आते ही सब व्यसन भाग गये है। भगवान ने मुझे सब प्रकार से सहायता की है, तो मैं अपने प्रभु के लिये इतना भी नही कर सकता ।

पिछले 9 वर्षो से मैं पालीतणा-शंखेश्वर-अयोध्यापूरम् जाता हुँ। जब भी प्रभु आदिनाथ की शत्रुंजय पर ध्वजा होती है, तब मैं निश्चित वहाँ पर ही होता हुं।

म.सा.! आप विश्वास करो या न करो..... दादा आदिनाथ ने मेरी सभी आशाएँ पूर्ण की है।

हर बार जब भी मैं ध्वजा के लिए जाने की तैयारी करता हुं, तब दादा मेरे सत्त्व की कठीन परीक्षा लेते हैं। पिछले 9 सालो से ऐसा ही हो रहा है कि जब भी मैं ध्वजा के लिए पालीताणा जाने की तैयारी करता हुँ, उन्ही दिनो में 25 प्रोग्राम मेरे सामने तैयार खडे हो जाते है। 25 प्रोग्राम छोड कर हर वर्ष मुझे जाना पडता है। 25 प्रोग्राम यानि 25, 000 रूपये तो होते ही है ना?

तो भी उन सबको गौण करके मैं जाता हुं और प्रभुजी की अनहद कृपा की धारा मुझपें बरसती है। जब मैं प्रभु की स्पर्शना करके वापस चेन्नई की धरती पर पैर रखता हुँ, उस समय से ही 50 प्रोग्राम तैयार ही होते है। '**प्रभु पाषाण है**' ये मानना बहुत बडी मूर्खता है।

पहले वर्ष में मैं जब पालीताणा गया था, तो नीचे दरवाजे के पास खडे रह कर मैंने प्रभुजी की ध्वजा का दर्शन किया था। हर वर्ष मैं थोडा थोडा आगे बढता गया और चमत्कार समझो कि गत वर्ष मैं प्रभु की ध्वजा फहरा रहा था। मैं प्रभु के मंदिर के शिखर पर था। म. सा.! दादा मेरे त्राण है, मेरे प्राण है।

2-3 वर्ष पहले हम 10 मित्रों की इस ध्वजा के लिए जाने की टिकीटें करवा दी थी। अंतिम दिन 10 में से 9 टिकटें Cancel हो गई। 10 व्यक्ति के साथ जाने वाला मैं एकदम अकेला पड गया। मैंने अहमदाबाद तक का संपूर्ण प्रवास मित्रो के विरह के कारण अकेले रोते-रोते व्यतीत किया।

अहमदाबाद से पापा को फोन किया और पापा ने मेरी स्थिति को समझ कर वापसी के लिए अेरोप्लेन में आने की हाँ कही। प्लेन की टिकीट लेने के लिए तत्पर भी हो गया, लेकिन एक अदृश्य शक्ति ने मुझे रोक लिया।

पापा को ना कह कर मैं अकेला 3 तीर्थो की यात्रा के लिए निकल पडा। सबसे पहला मेरा मुकाम था शंखेश्वर! प्रभु की पूजा और पक्षाल के लिए बडी-बडी लाईने..... उसके बीच घूसने का प्रयास मैंने कभी किया नहीं।

वहाँ एक भाई हैं-ठाकुर! 'उंचा अंबर थी' गीत उन्होंने ही गाया है। उनका शंखेश्वर के मंदिर में Hold अच्छा है। अच्छे स्वभाव वाले कार्यकर्ता है। उनका और मेरा अच्छा परिचय भी है। उस दिन मैं शंखेश्वर दादा को 108 प्रदक्षिणा दे रहा था। चढावे पूरे हो गये थे और अलग-अलग पूजाएँ चल रही थी।

एक बहन ने दो चढावे लिये थे। एक चंदन पूजा का और दूसरा मुकुट पूजा का। ठाकुर भाई ने मुझे बुलाया। मुझे साथ में लेकर उस बहन के पास गये। बहन अपने सोये हुये दो बेटो के आने की राह देख रही थी।

"ये भाई चेन्नई से आये है। बहुत भाविक है। आपके दोनो बच्चे आये नहीं हैं और आपने चंदन पूजा कर ही ली है, तो मुकुट पूजा का लाभ आप इस भाई को दे दो ना?" मेरे लिए ठाकुर भाई ने उस बहन से विनंति की।

परीक्षा में सफल हुए छात्र पर जिस प्रकार टीचर खुश होती है, उसी प्रकार मेरे सत्त्व पर प्रभु शंखेश्वर खुश हो गये हो वैसी घटना वहाँ घटी। उस बहन ने एक क्षण का भी विचार किये बिना 'हाँ' कह दिया।

मैं आनंद से पागल हो गया। 1-1/2 लाख का चढावा यूं ही मुफ्त में मिल

जाये और वो भी मेरे जैसे अभागी को, इस बात का मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था।

मुकुट चढाने के लिये मैं गंभारे में गया। पूजारी ने मुझसे कहा कि, "अब 20 मिनट तक तुं और प्रभु ही है.... जितना मानना हो उतना प्रभु को मान ले।"

गंभारे में जाकर मैंने प्रभु की पूजा एक बार की। मेरी आँखो से आँसुओं की धार तो निकल ही रही थी। '20 *मिनट तक प्रभु के साथ करना क्या?* 'पूजारी के कहने पर मैंने दूसरी बार पूजा की, *'अब क्या करुं?'*

फिर पूजारी ने मुझसे कहा, "हमेशा प्रभु के फण के उपर अंगलुंछणे पडे हुए होते है। परंतु आज अंगलुंछणे नहीं है, इसलिए तुं फण की पूजा कर ले।"

मैंने पूजारी की बात के अनुसार केसर में अँगुली डुबोयी और फणा की पूजा करने के लिये हाथ को लंबा किया। परंतु, फणा के 4 अंगुल पहले मेरा हाथ अटक गया। मैंने बहुत कोशिश की, परंतु हाथ आगे बढा ही नहीं।

फिर मैंने दादा आदिनाथ और दादा शंखेश्वर का नामस्मरण कर हाथ आगे बढाया। इस बार हाथ आगे बढा और मेरी अनामिका अंगुली और फणा का स्पर्श हुआ। जाने कि मेरे हाथ में जबरदस्त झटका लगा हो, वैसे मेरा पूरा हाथ काँपने लगा। मेरे पूरे हाथ में किसी ने करंट दिया हो, वैसी अनुभूति हुई।

जब तक फणा के साथ मेरा संपर्क रहा, तब तक पूरी प्रतिमा जैसे जीवंत न हो वैसी संवेदना मुझे हुई। फणा के अंदर धरणेन्द्र–पद्मावती का साक्षात् वास मैंने अनुभव किया। फिर पूजारी ने मुझे नीचे रही हुई देवी माँ की पूजा करने के लिये कहा। वहाँ भी मुझे फणा जैसा ही अनुभव हुआ। अद्भूत दैवी शक्ति का अनुभव मुझे उस वर्ष की यात्रा के दौरान हुआ। चेन्नई वापस आने के बाद मुझे यात्रा Cancel नहीं करने का बहुत आनंद हुआ।

इसके पहले वर्ष जब मैं पालीतणा गया था, तब गंभारे से बाहर निकलते वक्त मैंने प्रभु के पास याचना की थी कि **'अगर आपको मेरे स्वजनो में से किसी को भी इस दुनियाँ से विदायी देनी हो, तो आपकी ध्वजा के समय बिल्कुल भी मत देना।'**

ध्वजा के दिनों से 5-10 दिन पहले विदायी देना, जिससे आपकी ध्वजा का आनंद मैं खोउ नहीं।"

"हर वर्ष ध्वजा के प्रोग्राम के लिये जब भी मैं पालीतणा जाता हुं, तब वहाँ 17 भेदी पूजा में ढोलक बजाने का लाभ मैं ही लेता हुँ। तीर्थस्थलों में ढोलक बजाने का एक रुपियाँ भी मैं लेता नहीं, क्यों कि तीर्थ स्थान वह मेरे लिए प्रभु के साथ का अनुसंधान का स्थान है।

जब भी मैं किसी भी मंदिर में भक्ति करने जाता हुँ, तो प्रभु की भक्ति में अपने आप को ओतप्रोत कर लेता हुँ। बहुत बार मेरे कलाकार मुझसे कहते है कि, "तु पब्लिक के सामने तो देख-तुझे प्रसिद्धि मिलेगी।" परंतु मेरा ध्यान तो मेरे दादा में ही होता है।

'भक्ति तो प्रभु की ही होती है, लोगों की नहीं...' ये समझ आज बहुत से कलाकारों में कम दिखायी देती है।

जब मैं प्रभु के सामने भक्ति करता हुँ, तब पैसों की बात भी बहुत बार भूल जाता हुँ। बाहर आकर ही पैसो की बात करता हुँ, उसके सिवाय नहीं। दीक्षार्थीओं के प्रोग्राम भी बहुत आते है, उसमें भी मेरा एक नियम है कि अगर, 'दीक्षार्थी कलाकारों का बहुमान करे, तो पैसा लेना, वरना सामने से मांगना नहीं। एक व्यक्ति संसार छोड रहा होता है, तो क्या मैं रूपए नही छोड सकता?'

हर वर्ष पर्युषण में मुझे बहुत से Offer अलग-अलग मंडलो से आते है। ज्यादा पैसे देने के लिए भी वो तैयार होते है, परंतु मैंने अरिहंत मंडल को उन 8 दिनों के दौरान सेवा देने का वचन दिया है।

कितने ही लोभावने Offer आते है, फिर भी मैंने वो वचन आज तक तोडा नहीं और उस मंडल के पदाधिकारियों ने भी मुझे कभी निराश किया नहीं।"

गिरीशभाई की श्रद्धा और धार्मिकता सुनकर मैं गदगद हो गया। कैसी प्रभु निष्ठा! कैसी प्रभु भक्ति!

"आप एक शो के कितने रूपये लेते हो?" मैंने प्रश्न किया।

"एक यानि 3 घंटे का प्रोग्राम। उसका रेट मैं मार्केट में जो भाव चल रहा हो, उस के अनुसार लेता हुँ। दूसरे कोई ट्रस्ट, मंडल जिन्होंने मुझे उपर लाने में ज्यादा मदद की हो, उनके पास मैं सामने से पैसे माँगता नहीं। वे जो भी दे उसे प्रभु की कृपा समझकर

लेकर निकल जाता हुँ और लगभग मुझे उपर लाने वालो ने मुझे कभी भी दुःखी किया नहीं।

परंतु, म. सा. ! **अपने जैनो को कलाकारों की कींमत नहीं है।** जैन इस कला को नीची समझते है और इसलिए कलाकारों के साथ भी तुच्छता का व्यवहार करते है। दूसरे धर्म मुसलमान, स्वामिनारायण में कलाकारों की बहुत कींमत होती है।

बहुत से जैन मुझे सुनाते है कि ''तुं जैन होकर इतने सारे पैसे माँगता हैं। तुझे हम थोडे ही देंगे....'' मैं शांति से सुनकर ले लेता हुँ।

ये लोग ही अजैन कलाकारों को बुलाते है, जो हमारे प्रभु के प्रोग्राम में हम सब जैनो की ही निंदा करते है। हमारी बहन को एकदम विकार दृष्टि से देखते है।

उन लोगों को समझाये कौन ?

इस कला के प्रति आदर पैदा कराने की अति आवश्यक्ता है म. सा. !

अब हमारे जैनो में भी मर्यादा खत्म होने लगी है। फटे हुए कपडो का तो ऐसा शौक अपने जैनो को लगा है कि मत पूछो बात... मुझे निमित्त तो बहुत मिलते है.... नारीका का शरीर ही ऐसा है कि जो पतन कराने में समर्थ है। और इसलिए ही म. सा. ! मैं जब भी किसी प्रोग्राम में जाता हुँ और ऐसा कोई रूप-वेष दिखायी दे, तो मैं तुरंत ही अपनी आंखे बंद कर लेता हुँ। या अपने ढोलक पर केंद्रीत कर लेता हुँ। प्रभु स्थान में आकर पाप बाँधने से मैं बहुत डरता हुँ।

यहाँ महिला मंडल बहुत हैं और अक्सर मेरे प्रोग्राम उनके साथ होते रहते है। तब संपूर्ण मर्यादा का पालन करने की, हो सके उतनी कोशिश मैं करता हुँ।'' ये ढोलक वाले गिरीशभाई के अंदर रही पवित्रता को सुनकर मुझे अत्यंत आनंद हुआ।

इस घटना का बयान करते वक्त गिरीश भाई रोने जैसे हो गये थे। उनका स्वर एकदम आर्द्र हो गया था। बात ऐसी हुई कि किसी भी अपनी सफलता का वर्णन करते समय गिरीशभाई आदिनाथ दादा की कृपा और दादा और दादी के आशीर्वाद ये दो वस्तु अचूक कह रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि, ''दादा-दादी की सेवा से आप क्या कहना चाहते हो ?'' उनका जवाब सुनकर एक साधु के तौर पर अपना आत्म-संप्रेक्षण करना पडे ऐसा एहसास मुझे तब हुआ।

एकदम नम आँखो से गिरीशभाई ने उस घटना का वर्णन करना चालू किया।

"म.सा. ! मैं जब छोटा था, तब मैं अपने पापा को दादी की सेवा करते देखता था। वो सेवा मैं कभी भी भूल सका नहीं।

मेरी दादी और नानी दोनो की तबियत बहुत खराब रहती। दादी दिन में १५-२० बार कपडे बिगाडते। शक्त थे तब तक दादी खुद ही कपडे धोती थी, अशक्त होने के बाद मम्मी धोती थी।

एक दिन हुआ ऐसा कि 'नानी की तबियत बहुत सीरियस है' ऐसे समाचार आएँ। मम्मी नानी की सेवा करने के लिए चली गई। मैं, पापा और दादी घर में थे। अचानक दादी को पेट में जोर से दुःखने लगा और दादी के कपडे संडास से खराब हो गये।

दादी को तब करमीये (पेट के कीडे) बहुत होते थे। एक हाथ जितने बढे करमीये तो मैंने मेरी खुल्ली आँखो से देखे हैं। करमीयो के कारण बहुत दुर्गंध आती थी। उल्टी हो जाये ऐसी दुर्गंध आती। मम्मी न होने के कारण, पापा ने अपने हाथो से दादी के कपडे साफ किए। नीचे पडी हुई संडास की पिचकारीयाँ साफ की।

दादी ये सब देख-देख कर सतत रो रही थी *'मेरा बेटा ये सब काम करे'*, ये विचार उनको दुःखी करता और दूसरी तरफ उनको ऐसा बेटा मिला है उसका हर्ष भी होता। इन अवसरों में मेरे पापा के चेहरे की रेखा भी बदलती नहीं और इस कारण दादी की अनहद कृपा उन पर बरसती। दादी के मुँख से निकले उद्गार हमारी शक्ति हैं।

अभी हमारा जीवन जो थोडा बहुत सेट है, ये दादी की बरसती कृपा के कारण ही है। जिस दिन से मैं अच्छा कमाने लगा, मैंने अपने पापा को निवृत्ति दे दी। वो फिर से नौकरी करने की बात करते, परंतु मेरे आग्रह और निषेध से उन्होंने भी नौकरी का आग्रह छोड दिया। जब तक मेरी शक्ति चलेगी, मैं पापा को हरगिज काम करने नहीं दूँगा।

काम से फ्री होने के बाद पापा ने बहुत सारी तपस्याएं की। 45 उपवास, 30 उपवास, 8 उपवास, 16 उपवास और अभी वर्षीतप चल रहा है। उनका पुण्य भी मुझे बहुत काम आता है।"

"आपकी उम्र कितनी?" मैंने गिरीश भाई को प्रश्न किया।

"27", एक शाब्दिक जवाब मिला।

"शादी करनी है?" मैंने पूछा।

"म. सा. ! संसार में इतनी दिलचस्पी रही नही है, तो भी अगर शादी हो जाये, तो ये फिक्स है कि लडका या लडकी २० वर्ष के हो जाने पर मैं अपनी कमाई उनको सौंप कर दीक्षा के पंथ पर चला जाउंगा।

सुरेशभाई के साथ बहुत बार प्रोग्राम होते रहते है और वो सभी को सतत प्रेरणा करते है कि *'जब मरना ही है, तो निर्णय करो कि श्रमण वेष के बिना नही मरेंगे। ये प्रभु के वेष में ही मेरा प्राण जाये।'* बस, जब से सुरेशभाई की ये बात सुनी है उस दिन से ठान लिया था कि मरना हो तो साधु वेश में ही मरना।"

"आप इतना अच्छा बजाते हो और चेन्नई में अव्वल हो, तो आपको बॉलीवुड से Offer आते नहीं?" मैंने कुतूहल से प्रश्न किया।

"म. सा. ! 1-2 वर्ष पहले मेरे जिजाजी के लिंक से मुझे बॉलीबुड का Offer आया था। उन लोगों ने मेरी रिकार्डिंग मंगवाई थी। रिकार्डिंग मैंने भेज दी। उनको बहुत अच्छी लगी। एक स्त्री का वहाँ से फोन आया।

Hello! गिरीशभाई! आपकी रिकार्डिंग हमको मिली, बहुत अच्छी लगी। हम आपको Job देने के लिए तैयार है। महिने का डेढ़ लाख पगार मिलेगा...." मैं तो खुश हो गया।

"पर गिरीशभाई! आपको यहाँ मुंबई आना पडेगा।" मैंने सोचा, *' ये तो चल जाएगा....*

"दूसरा हम आपको यहाँ रहने के लिए एक B.H.K का Flat देंगे। सुबह ९ से ३ बजे तक प्रेक्टिस होगी। हम सब यहाँ नानवेज खाने वाले है, लेकिन आपको जैन होने से वेज खाना मिल जाएगा, परंतु साथ में बैठना तो होगा..", मेरे मन में थोडा खटका लगा।

"और तीसरा! यहाँ कल्चर बहुत ओपन है। इसलिए रात को लडकीयो के साथ....", मैं समझ गया। ऐसी पाप की दुनियाँ में प्रवेश करने का विचार मैंने छोड दिया।

"मैं सोच कर जवाब दूँगा," कहकर मैंने फोन रख दिया।

दो दिन बाद वापस फोन आया, "आपको अगर 11/2 लाख रूपये कम लगते है, तो हम 2 लाख देने को तैयार है। बोलो Offer मंजूर है।"

"नहीं.... मेरे प्रभु के पूजा-दर्शन वहाँ नहीं है, इसलिए मैं ये Offer स्वीकार नही कर सकता हुँ Thank You!" मैंने फोन रख दिया। प्रभु की पूजा से ज्यादा वहाँ की बेशरमी मुझे ज्यादा डसती था। परंतु ये बोलने के लिए मैं समर्थ नहीं था। इसलिए प्रभु को आगे करके मैंने मेरा रास्ता निकाल लिया।

म. सा. ! पहले जब परिस्थिति ज्यादा खराब थी और पैसों की जरुरत ज्यादा थी, तब मैं शादी वगेरे प्रोग्राम भी लेता था, परंतु अब प्रभु की कृपा से वो सब भी बंद कर दिया है। प्रभु के प्रोग्राम ही इतने आते है कि बाहर जाने की जरुरत ही नहीं पडती।

दूसरी भी एक घटना घटी कि जिसके कारण मैंने शादी वगेरे प्रोग्रामों में जाना बंद कर दिया।

एक बार मैं एक मुसलमान की शादी में गया। लगभग सभी जातियों के यहाँ मैं जाकर आया हुँ। वहां कव्वाली चल रही थी। उसमें एक व्यक्ति मेरे पास आया और मेरे ढोलक के आजुबाजु पैसे घुमाकर उसने मुझे दिये।

मुझे ये अच्छा नहीं लगा। *'मेरी ही सरस्वती के उपर पैसा घुमाकर ये मुझे दे रहा है।'* मुझे ये मेरी विद्या का अपमान लगा। बस..... उस दिन से लग्न प्रसंगो में जाना बंद कर दिया।

हाँ! माताजी की चौकी वगेरे धार्मिक प्रोग्रामों में मैं बजाता हुँ...."

"म. सा. ! एक बार मैं ताम्बरम से आगे चेन्नई के एक स्थान पर बजाने के लिए गया था। ३ दिन का प्रोग्राम था। ३ दिन तक लगातार अम्बा माता के भजन चलने वाले थे। हुआ ऐसा कि लगातार ३ दिन तक तो कोई भी गा या बजा सकता नहीं, इसलिए हर 4-5 घंटो के बाद गायक और बजाने वाले बदल दिए जाये ऐसा निश्चित किया गया। मुझे भी माताजी के भक्तों ने आमंत्रण दिया।

सबसे पहले मैं ही ढोलक पर आया। 4-5 घंटे बीत गये, परंतु कोई दूसरा ढोलक वाला आया ही नहीं। गायक बदले, दूसरे बजाने वाले बदले, परंतु मैं तो वहीं का वहीं...

आयोजक आये और उन्होंने मुझे बताया कि, "ढोलक बजाने वाले आप अकेले ही हो। दूसरा कोई ढोलक वाला हिंदुस्तानी बजा सके, ऐसा नहीं है। बोलो चलेगा?"

'72 घंटे बाप रे! कैसे बजाउंगा?' मन में विचार आया। प्रभु के पास शक्ति माँगी। आयोजकों को हाँ कहा। पहली रात बीत गयी। दूसरे दिन वो के वो गायक आये। मुझे वहाँ का वहाँ ही बैठा देखकर सबको आश्चर्य हुआ।

"आप कल से बजा ही रहे हो?" एक गायक ने पूछा। मैंने सिर हिलाकर हाँ कहा। साहेबजी! मैंने सतत 72 घंटे ढोलक बजाया। आज अगर में अप्लाई करुं तो गिन्निस बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड में मेरा नाम आ सकता है। इतने लम्बे समय तक पूरी दुनियाँ में आजतक किसी ने भी ढोलक नहीं बजाया होगा।

उस प्रसंग की पूरी Recording भी स्टुडियो वाले के पास शायद होगी। परंतु मेरी इच्छा नहीं है। प्रभु की कृपा से मैं बहुत फेमस ही हुँ। और फेमस होने की इच्छा नहीं है।

गुरुजी! वहाँ के लोग इतने खुश हुये कि मैंने उन लोगों के पास 3 घंटे के 21/2 हजार के हिसाब से 72 घंटे के 60 हजार मांगे, परंतु वहाँ के आयोजकों ने आश्चर्य और खुशी से 75 हजार रूपयो से मेरा बहुमान किया।

फिर मैं वहाँ से 75 K.M बाईक के उपर सोते-सोते केसरवाडी गया। वहाँ आखात्रीज के वर्षीतप के पारणे थे। वहाँ ढोलक बजाने का वचन मैंने दिया था। वहाँ ३ घंटे ढोलक बजाया और फिर घर आकर मैं सो गया।

इतने लम्बे समय तक ढोलक बजाने के बाद भी मैं थका नहीं। अभी भी दिन के 3-4 प्रोग्राम होते है। तीनों प्रोग्राम में समान शक्ति से बजा सकता हुँ...

भगवान का दिया हुआ ये विशेष आशीर्वाद है कि ढोलक बजाने की बात आये तो मैं विश्राम नाम की वस्तु भूल जाता हुँ।

म. सा. ! आज सुबह भी प्रोग्राम था। मुझे अभी 104 बुखार है। तो भी दवाई लिये बिना भी मैं ढोलक स्वस्थता पूर्वक बजाने में समर्थ हुँ। कभी भी हॉस्पिटल के चक्कर में मैं पडता नहीं। प्रभु ही मेरे आधार है। मेरे पूरे परिवार को हॉस्पिटल के नाम से ही चीड है। कुछ भी हो जाये तो घरेलू उपचार कर लेंगे, परंतु हॉस्पिटल जायेंगे नहीं।"

''म. सा. ! मेरा पूरा जीवन लगभग गरीबी में ही बीता और इसीलिए गरीबी का दु:ख कैसा होता है ये मुझे बहुत अच्छे से पता है। इसीलिए मैंने तय किया है कि मेरी जितनी भी इन्कम हो उसमें से 10% पैसे साधर्मिक में देना।

इस चेन्नई में ऐसे बहुत परिवार है कि जिनको खाने के भी फांफे पडते है। हमसे हो सके उतनी उनकी मदद करते है।

थोडे दिन पहले मैं चॉट वाले के यहाँ पफ खा रहा था। मेरे पास में एक जैन भाई ही खडा था। एक एकदम बुढ्ढि भिखारण उस जैन भाई के पास आयी। उस भाई ने उस भिखारी मॉजी को २ रूपये का सिक्का दिया। उस भिखारी माँजी ने मेरे सामने ही उसको वापस वो सिक्का दे दिया।

फिर वो माँजी मेरे पास आयी। मैने माँजी से कहा ''अम्मा! मैं आपको पैसा नहीं दूंगा। तुझे खाना है तो बोल!'' माँजी ने हाँ कहा। बुढ्ढि माँजी पफ तो खा सकती नहीं और वो थी भी तमिल... इसलिए मैं उसे पास वाले होटल में लेकर गया।

मैने माँजी के लिये इडली-वडा-ढोसा-सांबर की एक प्लेट मंगायी। कुल बिल 80 रूपये का बना। मेरा पफ था 30 रूपये का और मांजी की प्लेट 80 रूपये की।

ये बात देखकर माँजी की आँखो से पानी बहने लगा। माँजी ने मुझे भरपूर आशीर्वाद दिया।

इसी प्रकार मैं अपने रावडी मित्रों के लिये भी करता हुँ। थोडे दिन पहले ही रास्ते पर मेरे पूराने मवाली मित्र मिले। उन्होंने कहा कि ''बहुत दिन हो गये हैं, चलना... कुछ पीला दे।'' मैंने स्पष्ट ना कह दिया। फिर सभी को होटल मे ले जाकर कंदमूल बिना के इडली-सांबर खिलाये।

वो मवाली मित्र भी सब धंधे में लग गए है। उनको भी पता चल गया है कि मवाली गिरि में कोई फायदा नहीं है। ये बात उनको पूछने पर पता चली।

मैं हो सके तब तक मेरे सभी कलाकारों को नॉनवेज खाने से रोकता हुँ। हमारे साथ एक कलाकार क्रिश्चन है। मैंने उसे समझाया कि,''भाई ! इस प्रभु के सामने तुं भक्ति करता है। तेरी रोजी-रोटी ये प्रभु पूरी करते है। और तुं हाड-माँस खाता है। ये कैसे चलेगा?''

अंतिम 6 महिने से उसने माँस छोड दिया है। मेरी बनती कोशिश मैं सभी को प्रेरणा करता रहता हुँ। "

"अभी भी आपको कोई काम पड जाये तो आपके मव्वाली मित्रों को बोलो तो वे सच में आयेंगे?" मैंने सवाल किया।

"हाँ! म. सा. ! अभी मेरे दो मवाली मित्र D.M.K पार्टी में आगे है। और एक मित्र A.D.M.K पार्टी में आगे है। परंतु मुझे इन सब की जरुरत ही नहीं पडती है। किसी के भी साथ क्लेश बांधने से क्या फायदा?

साहेबजी! अभी प्रभु साथ में है, तो कोई दूसरा मुझे हैरान भी करें, तो समाधान प्रभु स्वत: कर लेते है। पैसों की तकलिफ पडे तो प्रभु सामने से मार्ग निकाल देते हैं।

अभी प्रभु की कृपा से लगभग सभी गायक मुझे नाम से पहचानते हैं।

बात करने से पहले 'जय आदिनाथ' बोलता हुँ, इस कारण से विशेष पहचानते हैं।

मुंबई के जतीनभाई बीड तो बहुत अच्छी तरह से पहचानते है। कई बार मेरी ढोलक की ताल सुन वो खुश हो जाते है और मुझे शाबाशी देते है। मैं मुंह नीचे करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। उन्होंने तो मुझे Offer भी किया है कि "तुम्हारे जैसे ढोलक के जानकार मुंबई में कम हैं। यदि तुम यहाँ आ जाते हो तो बहुत सारे कार्यक्रम व बहुतसी आय प्राप्त हो सकती है।

लेकिन साहेबजी! मुझे चेन्नई छोडने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं होती। यहां पैसे भले कम हो, पर मुझे राह बताने वाली यहीं धरती है। इसलिए मैं चेन्नई के ट्रस्टों, मंडलो को छोड नहीं सकता हुँ।

साहेबजी! बाहरगाँव से मुझे ढोलक बजाने हेतु आमंत्रण आते है, पर मैं उन संघो या ट्रस्टों को पूछता हुँ कि " वहाँ कोई ढोलक बजाने वाला है या नहीं ?"

यदि कोई हो तो मैं उनको वही ढोलक वाले को कार्यक्रम देने को कह देता हुँ। क्योकि मेरी यहाँ से आने जाने की टिकट संघ को करनी पडती है, अत: दुगुना खर्चा होता है। संघ को इसमें खुब नुकसान होता है और संघ को नुकसान हो, ये मुझे बिलकुल नहीं जचता और इसलिए ही जब संघ के ट्रस्टी भोजन आदि फालतू चीजो में पैसे बिगाडे

ये मैं नहीं सह सकता।

अब वहाँ का संघ मेरा ही आग्रह रखे तो मैं ना नहीं कहता और कार्यक्रम ले लेता हुँ। ऐसे थोडे संघ हैं जो मेरा ही आग्रह रखते है। मेरी उपस्थिति उनके कार्यक्रम में ना हो तो उनको बुरा लगता है।

म. सा.! अभी एक महिने के 50 कार्यक्रम करता हुँ और मेरे परिवार का अच्छी तरह से पालन कर संकु, इतने पैसे प्रभु की कृपा से एकत्रित हो ही जाते हैं। भविष्य में कभी बुरा समय आये, तब पैसे ना मिले तो भी मैं प्रभु की संगीत भक्ति छोडने वाला नहीं। मेरे प्रभुने मुझे बहुत कुछ दिया है।

एकदम धीरे से नजदीक आकर गिरीशभाई ने मुझे कहाँ, "साहेबजी! प्रभुने ढोलक बजाने के अलावा भी मुझे एक शक्ति दी है।"

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैं तो गिरीशभाई को एक ढोलक वादक के रूप में ही पहचानता था।

"क्या?"

"साहेबजी ! मुझे भविष्य में होने वाली घटना पहले ही किसी तरीके से पता चल जाती है।"

"मतलब?"

"मतबल कि यदि किसी का एक्सीडेंट या कोई दुर्घटना होने वाली हो तो अवचेतन दिमाग से उस व्यक्ति को रास्ते में देख ऐसा लगने लगता है कि आज इसके साथ कुछ होने वाला है।

चार दिन पहले ही एक व्यक्ति Bike पर मेरे पास से गुजरा। मुझे लगने लगा कि *'आज इसके पिताजी के साथ कुछ होने वाला है।'*

मैं मेरा काम पूरा करके वापस Apollo Hospital के वहाँ से गुजर रहा था, तभी वो भाई अपने पिता को एम्बुलेंस में कही लेकर जा रहा था। मैंने आसपास पूछा तो मालुम पडा कि उस भाई के पप्पा को अचानक कुछ हुआ और वे नीचे गिर पडे। वह भाई अपने पप्पा को लेने ही आया था।

ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार हुआ है। एक ही बात का मुझे दुःख है कि जब

किसी का कुछ बुरा होने वाला होता है,तब ही मुझे पता चलता है। अच्छी घटनाएँ पता नहीं चलती।'' बाद में वो भाई शांत हो गये।

सभी साधुओं ने संथारा कर लिया था। गिरीशभाई को उनकी मम्मी के दो-तीन फोन आ गए थे।

घडी 10.30 का समय बता रही थी।

'' साहेबजी! आपको सुबह उठकर स्वाध्याय आदि क्रिया करनी हैं। मेरी तो बाते पूरी नहीं होंगी। अनुमति लेता हुँ। त्रिकाल वंदना!''

मैं उठा। बहुत ज्यादा उमस होने के कारण चोलपट्टा भीगा हो गया था। मैं मात्रु करके आया, पोरिसी पढाई और गिरीश भाई की गुण गरिमा को याद करते करते मैं सो गया।

9 अप्रेल को उपकरण के चढावो में गिरीशभाई ने पात्रा का चढावा-एक साल तक थाली धोकर पीने का नियम लेकर लिया। पात्रा वहोराते समय गिरीशभाई के चेहरे पर गजब कोटिका भाव था।

निधि नेहा बहन ने 2 दिन के बाद मुझे कहा,''इस भाई ने हमारे पापा को कहा कि ''इस बार के ढोलक बजाने के पैसे मत देना। बस जिस पात्रें का चढावा मैंने लिया है, वह पात्रा मुझे दे देना। पूरी जिंदगी मुझे मेरे द्वारा किये गए इस सुकृत की याद बनी रहेगी।''

गिरीशभाई के साथ आने वाले गुजरातीभाई गणेश, जो बहुत ही सुरीला Casio बजाते है, उन्होंने भी तरपणी वहोराने का चढावा लिया तरपणी वहोराने हेतु इस भाई ने एक साल तक चम्मच उपयोग न करने का नियम लिया।

मैंने गणेशभाई को ये तरपणी खुद के घर पर रखने के लिए दे दी।

चेन्नई वालों को शायद कभी गिरीशभाई के बारे में पूछो तो वे Negative भी बोलेगे और कुछ अंश में वो सच भी होगा, पर हरेक व्यक्ति के दो चेहरे होते ही है।

अच्छा ग्रहण करना, यह अपनी गुण दृष्टि है। खराब ग्रहण करना यह अपनी दोष दृष्टि है।

हमारे पूज्य गुरुमां कहते थे कि, *'संयम को यदि शुद्ध बनाना हो, स्वच्छ*

बनाना हो, तो स्वदोष निंदा व परगुण प्रशंसा के आचार को कभी मत भूलना। इसकों रग रग में उतार दिया तो धरती पर ही स्वर्ग उतर जायेगा।"

विचारणीय, प्ररुपनीय, आचरणीय कतिपय बाते:-

1) समाज के शिकंजे में फँसने में साधु समाज भी बकात नहीं है,जबकि ये गिरीशभाई इसकी परवाह किये बिना आगे बढ रहे है। खुद के समाज को संभालने हेतु, खुद के भक्त वर्ग को संभालने हेतु हम भगवान की आज्ञा में भी बांध छोड कर लेते है। ये कितना उचित है?

समाज से जो पराया होता है वह साधु कहलाता है। वैराग्य शतक की गाथाओं का पुनरार्वतन करने की आवश्यक्ता है। स्वजन विराग ना हो तो समाज के पीछे पागल हो गये लोगों की तरह अपना भी अधोपतन दूर नहीं। समाज की चापलूसी करने के पहले ऋद्धि गारव के कारण नरक, निगोद में तडफते १४ पूर्वधरों को याद कर लेना।

स्वजन–समाज से कोसो दूर रहने में कल्याण निश्चित है। नहीं तो अभी बाजार में आ रही नयी–नयी वस्तुओं के जैसे हम भी संसार में आवागमन करते रहेंगे।

2) गिरीश भाई खुद को बॉलीवुड, बहुत सारे व्यक्तिओं से ब्रम्हचर्य के विषय में अधोपतन के निमित्त मिलने के बावजूद, उस रास्ते से दूर ही रहने का प्रयास करते है।

हे मेरे प्यारे संयमीयो! क्या हम ऐसा करते है? ९ ब्रह्मचर्य की वाड जैसी जोरदार सुरक्षा मिलने के बावजूद क्या हम उसकी रक्षा करते हैं? काया से शायद अपनी खानदानी के कारण पाप ना करें, तो भी वचन और उसमे भी विशेष मन से हम पवित्र रह सकते हैं? परमार्हत कुमारपाल महाराजा चौमासे में ऐसा नियम लेते थे कि *'मन से भी अब्रह्म का सेवन हो तो 1 उपवास, वचन से हो तो 1 आयंबिल और काया से हो तो 1 एकासणा।* कैसी पवित्रता एक महाश्रावक की और हमने साधु होकर ऐसा संकल्प किया है कभी ?

मन में पनप रहे विचार को मन में ही दबा देना अत्यंत जरुरी है, नहीं तो वह व्यक्ति को वचन और काया के पाप तक पहुँचा देते है।

3) **"भकखरं पिव दट्ठुणं, दिट्ठि पडिसमाहरे।"**

दशवैकालिक का अमृत वचन! स्त्रीमात्र को देखते ही नजर पीछे हटा लेने का विधान हमारे शास्त्रों में किया गया है और सिर्फ जीवित स्त्री ही नही, बल्कि चित्र में बताई

गई स्त्री को देखने पर भी यही विधान है।

विकथा को बढावा देने में अग्रेसर समाचार पत्रो में Third Class चित्र नहीं आते? तो हम कैसे इनको पढ सकते है? शासन प्रभावको को छोड दो, उन गीतीर्थ महात्मओं को तो विवेक होता है पर हमको?

नये Flat व बिल्डिंगो में लगे पेपरो पर अपनी नजर नही जाती ना?

एक श्रावक, वो भी ढोलक बजाने वाला, यदि इस पाप से दूर रहने की कोशिश कर रहा है, तो चतुर्विध संघ के आधार भूत साधु साध्वीजी की कक्षा तो कैसी होनी चाहिए?

इस पाप का स्पर्श करने से पहले बप्पभट्टसूरिजी, हेमचन्द्रसूरि जी, स्थूलभद्र सूरिजी को याद करना ना भूले.......

4. 104 बुखार में अपनी दशा कैसी होती है? क्या प्रभु भक्ति हमारे बाह्यताप को भूला देने में समर्थ है या ऐसे समय में हम मंदिर जाना भी Cancel कर देते है।

दुःख आते तब प्रभु भक्ति कम होती है या ज्यादा?

प्रभु पर अपनी श्रद्धा कितनी?

पच्चक्खाण पारने का Licence लेने हेतु तो हम मंदिर नहीं जाते ना?

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्। दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ।।

ये पंक्तियां छोटे से छोटे बच्चे को भी आती है। हमको तो खुद के नाम की तरह ये याद हो गयी है। पर एक एक पद के अर्थ की स्पर्शना कभी की?

भगवान का दर्शन मोक्ष का साधन लगा? थोडी चीजें सिर्फ बोलने की ही नही होती, अनुभव करने की होती है। उसका आनंद ही अलग होता है। भक्तियोगाचार्य प. पू. आ. यशोविजयसूरिजी के शब्दो में इसे "**प्रभु का प्यारा परम स्पर्श**" कहा जाता है।

5. खाये हुए स्वाध्याय के भोजन को पचाने हेतु रसायन का कार्य करने वाला वैयावच्च आज अति आवश्यक हो गया है। संसार में आज कल के लोगों की सहन शक्ति घटती जा रही है।

विषम काल के प्रभाव से ज्ञान की वृद्धि होते ही मान की वृद्धि होने की संभावना बढ जाती है। मान की वृद्धि होने पर कोई, किसी कारण से कुछ काम बोले तो, ये उस व्यक्ति को कम ही पसंद आयेगा व सहनशीलता के अभाव में तकरारें ही होगी।

ऐसा दृश्य ना बने, इसलिए दीक्षा के प्रारंभ से ही स्वाध्याय के साथ वैयावच्च के संस्कार देने अनिवार्य है। वैयावच्च से 100% सहनशीलता के गुण का विकास होता है। नहीं तो बिना वैयावच्च किया हुआ स्वाध्याय **'पयपानं भुजङ्गानां, केवलं विषवर्धनम्'** की सूक्ति को सार्थक करने वाली बनेगी।

6. लगभग जैन समाज में गिरीशभाई जैसो पर लोगो का नजरीया अच्छा नही होता। जैन लोग ढोलक आदि बजाने को हल्के स्तर का काम मानते है।

और इसी कारण से ऐसे लोगों की गुणवत्ता को पहचानने में हमारी नजरों के सामने काली पट्टी आ जाती है।

हम भूल जाते है कि आदिनाथ भगवान ने बताई हुई ७२ कलाओं में एक कला संगीत की भी है।

हम भूल जाते है कि रावण को अष्टापद पर वीणा बजाते बजाते ही तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जित हुआ था।

हम भूल जाते है कि हमारे भावों वृद्धि करने में इन कलाकारों का बडा हाथ है।

हम भूल जाते है कि छोटे से छोटे व्यक्ति की भी हमारे जिनशासन में कींमत है।

समाज को इस विषय में जगाने की बहुत ज्यादा जरुरत है। ऐसे लोगों को यदि प्रोत्साहन दिया जाये तो इनके जीवन में बहुत तेजी से परिवर्तन देखने को मिलते है।

हमारे संघो के मोभियों की तुच्छता और दबाने की प्रवृत्तियों के कारण ऐसे कितने ही सरस्वती के उपासकों को जिनशासन खो चूका है। जैन अजैन बन गये हैं।

ऐसे तो कितने ही उपदेश इस आत्मकथा में से निकले वैसे हैं। पर अब हाथ थक गये हैं। आप सभी समझदार ही हो।

'सुज्ञस्य किं बहुना!' और हाँ इस गुणवत्ता को देखकर आपको यदि अनुमोदना करने की ईच्छा हो तो ये भाई आजके दुनिया में आपसे दूर नहीं।

गिरीश भाई जैन: मो: 9884796750/9791157162

कोई भी श्रावक मोबाईल द्वारा इस भाई का संपर्क करके इन्हे दो मीठे शब्द कहना। अवश्य ही उपबृंहना नाम के दर्शनाचार का पालन होगा।

।। बहुरत्ना वसुन्धरा ।।

।। नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय।।

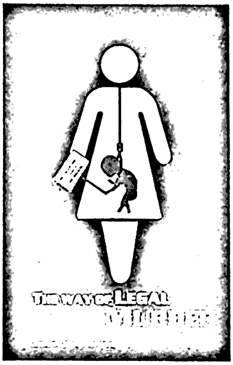

Abortion के कातील
पाप से पूरा विश्व व्याप्त हो चुका है...

Amercia जैसे राष्ट्र भी
अब इससे पीछे फिर रहे है...

अब समय आ गया है
जगने का...

एक बार पढ़ लिजीए इस पुस्तिका को....
आपका मन जरूर बदनलेगा

(यह पुस्तिका English-हिन्दी-गुजराती
तीनो भाषाओं में उपलब्ध है।)

भारत के नौकादल की एक
TANK-CARRIER जहाज.... !

इस जहाज पर चीफ इंजीनियर की
भूमिका को अदा करनेवाले,

***'यतो धर्मः, ततो जयः'* के सूत्र को**
खुद के जीवन में चरितार्थ करनेवाले

देश के लिए खुद के जीवन को समर्पित करनेवाले,

हिंसा और अहिंसा दोनो एक साथ रह सकती
इस हकीकत को बयान करनेवाले

एक नौजवान, ज्ञानवान नौकासैनिक की यह जीवन गाथा है,

'व्यक्ति सिर्फ जन्म से जैन नहीं होता, कर्म से जैन होता है...'
यह सच्चाई मानने पर मजबूर कर दे वैसी पहेलीवाली
यह जीवनगाथा है...

***'देश रक्षा के साथ धर्मरक्षा'* के यज्ञ को खुद के जीवन**
में परोनेवाले उस नौसैनिक को करोड़ो सलाम... !

कर्म के विपाक अतिभयावह होते है...
कर्म कब, किसको, कहाँ से, क्युँ Attack करेगा,
इसका गणित मस्तिष्क से करना Possible नहीं है....
कर्म की भयंकरता को ही बतानेवाली
एक गर्भवती बहन की दास्तान !
हॉस्पिटल... डॉक्टर की भूल.... मृत्यु की निकटता....
भाग्य की चमक... मन का समाधान...
भावि की इच्छा.... इन सभी भावों को छूनेवाली पहेली!
इस कथा को पढने के बाद भगवान के
समक्ष शब्द निकल पडेंगे..
**"मेरे साथ ऐसा मत करना
भगवान!"**

।। जय श्री कृष्ण ।।

वृंदावन.......!

- गोपीयों और कृष्ण के पवित्र प्रेम का पुनित स्थान...
- जहां के कण-कण में कृष्ण की प्रतिध्वनी सुनाई देती है...
- वैसे स्थान को खुदका निवास स्थान बनाने वाले एक कृष्ण भक्त की अनुभव गाथा...
- परमात्मा और भक्त की नजदीकता को नजदीकी से अनुभव कराने वाली कथा यानि

।। जय श्री कृष्ण ।।